Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

नृवंशविज्ञान अध्ययन

(Reading Ethnographies)

B.S.O.E.-144

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Ved Prakash Sharma*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

नृवंशविज्ञान अध्ययन

(Reading Ethnographies)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1

Question Paper—December-2022 (Solved) 1

Question Paper—Exam Held in July-2022 (Solved) 1

Sample Question Paper–1 (Solved) 1

Sample Question Paper–2 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

नृवंशविज्ञान के विषय (Themes in Ethnographies)

1. मानव जाति विज्ञान/नृवंशविज्ञान 1
(Understanding Ethnography)

2. उपनिवेशीय नृवंशविज्ञान (Colonial Ethnography) 11

3. उत्कृष्ट नृवंशविज्ञान (Classical Ethnography) 21

4. भारतीय नृवंशविज्ञान/मानव जाति वर्णन 29
(Indian Ethnography)

5. वैश्विक मानव जाति वर्णन (नृवंशविज्ञान) (Global Ethnography) 37

नृवंशविज्ञान अनुसंधान (Ethnographic Cases)

6. पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र के 'आर्गोनॉट्स' : बी. मेलिनोवस्की 47
(Argonauts of the Western Pacific–B. Malinowski)

7. कमिंग ऑफ एज इन समोआ : मारग्रेट मीड 57
(Coming of Age in Samoa: Margaret Mead)

8. कूर्ग्स का धर्म और समाज – एम.एन. श्रीनिवास 67
(Religion and Society Among the Coorgs – M.N. Srinivas)

9. मुक्कूवार महिलाएँ : कल्पना राम 76
(Mukkuvar Women: Kalpana Ram)

10. रणनीतियां और नुकसान : राजनीति का सामाजिक नृवंशविज्ञान 82
–एफ.जी. बेली
(Stratagems and Spoils: A Social Anthropology of Politics
–F.G. Bailey)

11. गली नुक्कड़ समाज/"स्ट्रीट कॉर्नर सोसाइटी"–डब्ल्यू.एफ. व्हाईट 92
(Street Corner Society : W.F. Whyte)

नृवंशविज्ञान की मूल अवधारणा (Ethnographic Practices and Styles)

12. नृवंशविज्ञान पर विमर्श (बहस) 99
(Debates on Doing Ethnography)

13. वैज्ञानिक नृवंशविज्ञान 109
(Scientific Ethnography)

14. नृवंशविज्ञान की नारीवादी विवेचना 120
(Feminist Critique of Ethnography)

15. व्याख्यात्मक नृवंशविज्ञान (मानवजाति विज्ञान) 131
(Interpretive Ethnography)

16. नैतिकता एवं नृवंशविज्ञान 140
(Ethics and Ethnography)

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

नृवंशविज्ञान का अध्ययन

(Reading Ethnographies)

B.S.O.E.-144

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. नृवंशविज्ञान के इतिहास एवं विकास पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'मानव जाति विज्ञान का इतिहास और विकास'

प्रश्न 2. व्याख्यात्मक नृवंशविज्ञान के महत्त्व का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-132, 'समालोचना'

प्रश्न 3. वैज्ञानिक नृवंशविज्ञान शोध में सम्मिलित चरणों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-110, 'वैज्ञानिक नृवंशविज्ञान का प्रस्तुतीकरण'

प्रश्न 4. नृवंशविज्ञान में सम्मिलित नये दृष्टिकोण कौन-से हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-100, 'नृवंशविज्ञान के नये आयाम'

प्रश्न 5. बेली (Bailey) ने राजनीतिक व्यवस्था का एक गेम के रूप में वर्णन क्यों किया? सबल एवं दुर्बल नेता में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-84, प्रश्न-1

प्रश्न 6. सामाजिक नृवंशविज्ञान के संबंध में मार्गरेट मीड के योगदान पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-60, प्रश्न-5, पृष्ठ-63, प्रश्न-9

प्रश्न 7. वैश्विक नृवंशविज्ञान में सम्मिलित विविध मुद्दों एवं चुनौतियों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-40, 'वैश्विक नृवंशविज्ञान से जुड़ी समस्याएं तथा चुनौतियां', पृष्ठ-46, प्रश्न-2

प्रश्न 8. भारतीय नृवंशविज्ञान के विविध चरणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-30, 'आरंभिक या आकार लेने वाला चरण (1772-1919)', 'रचनात्मक चरण (1920-1949)', 'विश्लेषणात्मक अवधि/चरण (1950-1990)' तथा पृष्ठ-31, 'मूल्यांकन अवधि (1990 तथा उसके बाद)'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

Exam Held In

July – 2022

(Solved)

नृवंशविज्ञान का अध्ययन

(Reading Ethnographies)

B.S.O.E.-144

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. नृवंशविज्ञान के इतिहास एवं विकास की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'मानव जाति विज्ञान का इतिहास और विकास'

प्रश्न 2. नृवंशविज्ञान शोध किन विविध नैतिक मुद्दों के मद्देनजर उभरता है? चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-140, 'नृवंशविज्ञान के मार्गदर्शक नैतिक मूल्य'

प्रश्न 3. व्याख्यात्मक नृवंशविज्ञान के उद्विकास का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-131, 'व्याख्यात्मक नृवंशविज्ञान का विकास'

प्रश्न 4. अनुसंधान के मुख्य क्षेत्र, जहां नारीवादी विचारक फिलहाल संलग्न हैं, कौन-से हैं? चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-121, 'नारीवादी नृवंशविज्ञान पद्धति'

प्रश्न 5. वैज्ञानिक नृवंशविज्ञान की संकल्पना का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-109, 'वैज्ञानिक नृवंशविज्ञान'

प्रश्न 6. 'स्ट्रीट कॉर्नर सोसाइटी' (एस.सी.एस.) पुस्तक की मुख्य विषय-वस्तुओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-94, प्रश्न 1

प्रश्न 7. राजनीतिक संरचना की परिभाषा दीजिए। बेली द्वारा रचित पुस्तक 'अंडरस्टैन्डिंग ऑफ पॉलिटिक्स सिस्टम एज ए गेम' की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-82, 'राजनीतिक ढांचे की परिभाषा', पृष्ठ-84, प्रश्न 1

प्रश्न 8. तमिलनाडु की मुक्कुवर सोसाइटी में महिलाओं की स्थिति की सविस्तार जाँच कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-77, प्रश्न 1, पृष्ठ-81, प्रश्न 2

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

नृवंशविज्ञान अध्ययन
(Reading Ethnographies)

नृवंशविज्ञान के विषय
(Themes in Ethnographies)

मानव जाति विज्ञान/नृवंशविज्ञान
(Understanding Ethnography)

1

परिचय

नृवंशविज्ञान ग्रीक शब्द 'एथनोस' से लिया गया है, जो एक लोग, एक जाति या एक सांस्कृतिक समूह को संदर्भित करता है। नृवंशविज्ञान शब्द उस विज्ञान को संदर्भित करता है, जो मानव जाति के जीवन के तरीकों का वर्णन करने के लिए प्रतिबद्ध है, जब 'एथनो' उपसर्ग 'ग्रेफिक' के साथ जुड़ता है, तो मानव जाति विज्ञान शब्द बनता है। इस प्रकार यह लोगों के सामाजिक वैज्ञानिक विवरणों के आधार पर उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को संदर्भित करता है। नृवंशविज्ञान एक कला और विज्ञान है, जो समूह या संस्कृति का वर्णन करता है। इसमें नृवंशविज्ञानी, शोधकर्ता लोगों के दैनिक जीवन का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहभागिता के आधार पर एक विस्तृत अध्ययन करते हैं तथा अनेक समस्याओं से संबंधित तथ्य शोध से जुड़े होते हैं। नृवंशविज्ञान, एक गुणात्मक पद्धति के रूप में, प्रतिभागियों के अवलोकन और बाद की व्याख्या के माध्यम से लोगों के विश्वासों, प्रथाओं, सामाजिक अंत:क्रियाओं और व्यवहारों की जांच करने के लिए उपयुक्त है। एक प्रक्रिया के रूप में नृवंशविज्ञान और एक उत्पाद के रूप में नृवंशविज्ञान के बीच अंतर करना महत्त्वपूर्ण है। नृवंशविज्ञान एक विधि के रूप में, अर्थात्, क्षेत्र में डेटा में भाग लेना और एकत्र करना, शोधकर्ता को किसी अन्य संस्कृति के दैनिक जीवन में गहन रूप से देखने, रिकॉर्ड करने और बातचीत करने की अनुमति देता है। एक उत्पाद के रूप में नृवंशविज्ञानी अपने द्वारा अध्ययन की गई संस्कृति का विस्तृत विवरण प्रदान करता है, जिसमें व्यक्तिगत और सैद्धांतिक विचार शामिल हैं तथा जो जनता के लिए उपलब्ध हैं।

अध्याय का विहंगावलोकन

मानव जाति विज्ञान का इतिहास और विकास

आमतौर पर नृवंशविज्ञान शब्द का प्रयोग 1800 के दशक के पूर्वार्द्ध में लोगों को उनकी भौतिक कलाकृतियों और संस्कृतियों की तुलना करने के लिए किया जाता था। नृवंशविज्ञानियों ने सीधे निरीक्षण नहीं किया। इसके बजाय, उन्होंने सरकारी अभिलेखों, मिशनरियों के दस्तावेजों और यात्राओं या अन्वेषकों के विवरणों की मदद ली थी। उपनिवेशवादियों संस्कृतियों की जानकारी, जिनका उद्देश्य 'कम सभ्य' मानव समाजों को सभ्य बनाना था, के विवरण में प्रस्तुत किए गए थे। पश्चिमी मिशनरियों, खोजकर्ताओं और औपनिवेशिक अधिकारियों के कार्यों के आधार पर नृवंशविज्ञान धीरे-धीरे विकसित हुआ।

मानव जाति विज्ञान की ब्रिटिश तथा शिकागो धाराएं–यात्रियों से प्राप्त विवरण एक विशेष साहित्य के लिए नृवंशविज्ञान का विकास आकर्षक रहा है। संस्कृति और सभ्यता की उत्पत्ति के साथ पश्चिमी लोगों का आकर्षण, इस धारणा के आधार पर कि आज के आदिम लोग, जिन्हें पश्चिमी लोग अपने से कम सभ्य मानते थे। वास्तव में, पश्चिम की आदिकालीन शुरुआत की जीवित प्रतिकृतियाँ थीं। औपचारिक नृवंशविज्ञान का निर्माण बीसवीं शताब्दी में दो अलग-अलग वैचारिक सफलताओं से प्रेरित था, एक ब्रिटेन में और दूसरा उत्तरी अमेरिका में, जिसे क्रमश: नृवंशविज्ञान के ब्रिटिश और शिकागो विचारधारा के रूप में जाना जाता है। नृवंशविज्ञान का ब्रिटिश स्कूल सामाजिक नृविज्ञान की शास्त्रीय परंपरा से उत्पन्न हुआ, जो ब्रिटेन में उभरा, जबकि

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

शिकागो समाजशास्त्रीय परंपरा दूसरे से उत्पन्न हुई। बोअस, जिन्हें 'अमेरिकी नृविज्ञान के पिता' के रूप में जाना जाता है, ने उन्नीसवीं शताब्दी के शुरुआती मानवविज्ञानियों द्वारा दूसरों से प्राप्त अपर्याप्त आंकड़ों के आधार पर किए गए आधे-अधूरे सामान्यीकरणों का उत्साहपूर्वक विरोध किया।

यद्यपि ब्रिटिश स्कूल अक्सर यूरोपीय उपनिवेशवाद से जुड़ा हुआ है। इसका मुख्य लक्ष्य मूल निवासियों की श्रम शक्ति का शोषण करने और यूरोप के निष्कर्षण उद्योगों को चलाने के लिए, अपने प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करने के लिए उनके उपनिवेशों की संस्कृति और मूल लोगों के बारे में सीखना था। इसका अब कोई औपनिवेशिक अर्थ नहीं है। यूरोपीय शिक्षाविद विशेष रूप से गैर-औद्योगिक लोगों और उनकी संस्कृति का अध्ययन करने में तेजी से रुचि रखने लगे।

नृवंशविज्ञान दृष्टिकोण 1920 के दशक में समाजशास्त्र में लागू किया गया था और शिकागो विश्वविद्यालय समाजशास्त्र विभाग ऐसा करने वाले पहले लोगों में से एक था। शिकागो स्कूल (शहरी नृवंशविज्ञान के) को अक्सर एक व्यवहार्य विकल्प के रूप में समाजशास्त्रीय फील्डवर्क स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है। उन्नीसवीं शताब्दी की अंतिम तिमाही के दौरान, ग्रेट डिप्रेशन से ठीक पहले, शिकागो स्कूल के शोधकर्ता रॉबर्ट ई. पार्क और अर्नेस्ट वर्गीस और उनके छात्रों ने एक विशिष्ट समूह के रोजमर्रा के जीवन, समुदायों और प्रतीकात्मक संबंधों के आधार पर नृवंशविज्ञान बनाया। 1930 के दशक तक शिकागो की 'विचलित उप-संस्कृतियों' और निम्न तथा अन्य समूहों के कई नृवंशविज्ञान लिखे गए थे। पेशेवर चोरों, टैक्सी चालकों और शहरी गिरोहों के सदस्यों का अध्ययन करने के लिए जीवन इतिहास पद्धति का उपयोग किया गया था।

मानव जाति विज्ञान के लेखन के लिए पूर्व आवश्यकताएँ

प्रत्यक्षवादी पद्धति को पहले मानवविज्ञानी और नृवंशविज्ञानियों द्वारा समर्थित किया गया था और नृवंशविज्ञान का प्रमुख लक्ष्य उनके द्वारा देखे गए क्षेत्रों के व्यापक, समग्र और पूर्ण विवरणों को प्रस्तुत करना था। हैमरस्ले का मानना है कि नृवंशविज्ञानियों का कार्य इन परिस्थितियों में लोगों की संस्कृति, दृष्टिकोण और प्रथाओं को जानना है। नृवंशविज्ञानी अनुसंधान स्थान और प्रतिभागियों का संपूर्ण विवरण प्रदान करता है।

नृवंशविज्ञानी शोधकर्ता की प्रत्यक्ष टिप्पणियों या कुछ प्रमुख जानकारियों के साथ बातचीत के आधार पर अनुसंधान सेटिंग और प्रतिभागियों का विस्तृत विवरण प्रदान करते हैं। त्रिकोणीयन तकनीक अनेक जानकारियों का पता लगाने की पद्धति पर आधारित है। यह अधिक व्यापक, परिशुद्ध एवं विश्वसनीय आंकड़े उपलब्ध कराने में सहायता करती है। नृवंशविज्ञान डेटा का विश्लेषण विषयगत रूप से किया जाता है, अर्थात् डेटा को विषयों में वर्गीकृत किया जाता है और फिर नृवंशविज्ञानी अपने अनुभवजन्य कार्य के प्रारंभिक सैद्धांतिक स्पष्टीकरण का निर्माण करते हैं।

पूर्णतावादी दृष्टि/समग्र दृष्टिकोण

एक सामाजिक समूह की पूरी छवि प्राप्त करने और इसके इतिहास, अर्थव्यवस्था, धर्म, राजनीति और पर्यावरण को चिह्नित करने के लिए नृवंशविज्ञानी अनुसंधान के लिए एक समग्र दृष्टिकोण का उपयोग करते हैं। यह परिप्रेक्ष्य नृवंशविज्ञानियों को तत्काल सांस्कृतिक संदर्भ के बाहर वास्तविकता को समझने में सक्षम बनाता है।

प्रासंगिकता

बाहरी अवलोकनों को सामाजिक संदर्भ में रखने से व्यापक परिप्रेक्ष्य में कार्य किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, लड़कियों की शिक्षा के संबंध में आपने देखा होगा कि छात्राओं के पढ़ाई छोड़ने के मामले अक्सर पुरुष छात्रों की तुलना में काफी अधिक होते हैं। यह परिप्रेक्ष्य नृवंशविज्ञानियों को मौजूदा सांस्कृतिक वातावरण को समझने में सहायक है। अत: लैंगिक भूमिकाओं के अधिक संदर्भ को ध्यान में रखते हुए नृवंशविज्ञानी सामाजिक जीवन को बेहतर ढंग से समझने में सक्षम हो सकता है।

एमिक तथा एटिक दृष्टिकोण

अधिकांश नृवंशविज्ञान अनुसंधान एमिक परिप्रेक्ष्य या अंदरूनी या मूल निवासी के वास्तविकता के परिप्रेक्ष्य के आसपास घूमते हैं। स्थितियों और व्यवहारों को समझना और सटीक रूप से चित्रित करना, इस अंदरूनी दृष्टिकोण की वास्तविकता की दृष्टि पर निर्भर करता है। दूसरी ओर, एक नैतिक दृष्टिकोण, बाहर से वास्तविकता का एक सामाजिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। अधिकांश नृवंशविज्ञानी अपने वैज्ञानिक अनुसंधान में इसे जोड़ने से पहले एमिक परिप्रेक्ष्य का दस्तावेजीकरण करते हैं। इसके अलावा, एक अच्छी नृवंशविज्ञान के लिए एमिक और एटिक दोनों दृष्टिकोणों की आवश्यकता होती है।

वास्तविकता का गैर-अनुमानित दृष्टिकोण

मानव विज्ञान के लिए यह आवश्यक है कि यदि उन्हें कोई अपरिचित प्रथा मिलती है, तो उन्हें कोई भी अनुचित निर्णय लेने से बचना चाहिए। हालाँकि, यह माना जाता है कि नृवंशविज्ञानी वस्तुनिष्ठ नहीं हो सकता है और उसके अपने विचार और पूर्वाग्रह हैं। नृजातीय व्यवहार या किसी के सांस्कृतिक मानदंडों और मानकों को किसी अन्य संस्कृति पर इस धारणा के आधार पर थोपना कि एक-दूसरे से श्रेष्ठ हैं, गलत है।

मानव विज्ञानों के प्रकार

सामाजिक विज्ञान में विभिन्न विचारों का प्रभाव कुछ हद तक विशेष रूप से अलग-अलग समय पर विभिन्न नृवंशविज्ञानियों द्वारा

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

उपयोग किए जाने वाले दृष्टिकोणों और विधियों में अंतर को समझा सकता है।

प्रत्यक्षवादी तथा प्रकार्यवादी मानव विज्ञान

उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान नृवंशविज्ञान में एक सकारात्मक दृष्टिकोण प्रबल हुआ। ज्ञान निर्माण की अनुभववादी अवधारणाओं के अनुसार, यह दृष्टिकोण निष्पक्षता और पूछताछ के विषय से दूरी को बढ़ावा देता है। शोधकर्ता को वस्तुनिष्ठ होने के लिए दूरी बनाए रखनी चाहिए और पूछताछ की वस्तु से अलग रहना चाहिए और निष्कर्ष शोधकर्ता की व्यक्तिगत राय मूल्यों के बजाय तथ्यों पर आधारित होनी चाहिए। इनका मुख्य लक्ष्य सामान्यीकरण योग्य कानूनों को खोजना है, जिनका उपयोग मानव व्यवहार की व्याख्या करने के लिए किया जा सकता है। प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण के बाद, मानवविज्ञानी जैसे मेलिनोवस्की, ईवांस प्रिचर्ड और रैडक्लिफ ब्राउन ने माना कि नृवंशविज्ञान का लक्ष्य समाज अथवा क्षेत्र से जुड़े लोगों के विचारों को जानना है। इन नृवंशविज्ञानियों का मानना है कि समाजों में समरूपता विद्यमान रहती है, अतः ये वास्तविकता से घनिष्ठता से जुड़े होते हैं।

मानव जाति विज्ञान का व्याख्यात्मक दृष्टिकोण

क्लिफोर्ड गीर्ट्ज का 'थिंक डिस्क्रिप्शन' में क्षेत्र में तथ्यों को दर्ज करने के बजाय अर्थ और वास्तविक भावनाओं पर केंद्रित है। ओ. रीली के अनुसार, मनुष्य को प्राकृतिक दुनिया में वस्तुओं के रूप में प्रतिक्रिया करने के बजाय सामाजिक दुनिया में अभिनेताओं के रूप में देखा जाना चाहिए। यह आग्रह किया गया था कि स्थिति के वास्तविक संदर्भ का अवलोकन किया जाए, ताकि कार्रवाई और उस सेटिंग के बीच संबंध को समझा जा सके। साथ ही प्रतिभागियों को इसके बारे में अधिक गुणात्मक गहराई और समृद्ध डेटा के साथ अधिक प्रासंगिक नृवंशविज्ञान तैयार करने पर जोर दिया गया।

घटना-क्रियापरक दृष्टिकोण

एल्फ्रेड शुट्ज (1972) के अनुसार, 1960 और 1970 के दशक में ज्यादातर गुणात्मक शोध घटनात्मक दृष्टिकोण से संबंधित थे, जो शोधकर्ताओं के दृष्टिकोण को प्राप्त करने पर जोर देते हैं। हम सिर्फ वही समझ पाते हैं, जिसे समझने में हमारी इंद्रियां सक्षम हैं, जैसे-जो देखते हैं, सुनते हैं, सूंघते हैं, महसूस करते हैं और स्वाद लेते हैं। घटनात्मक विज्ञान सामाजिक दुनिया का एक परिप्रेक्ष्य प्रदान करती है, जिसमें मानव विषय खुद को परिभाषित करते हैं और वे क्या महत्त्व देते हैं।

विवेचनात्मक मानव जाति विज्ञान

कुछ नृवंशविज्ञानों की नीति व्यापक सामाजिक, राजनीतिक, प्रतीकात्मक या आर्थिक समस्याओं को उजागर करने वाली है। नृवंशविज्ञान में, प्रांतीय दृष्टि से दूर और व्यापक विषयों की ओर रुझान रहा है, जैसे कि राजनीतिक अर्थव्यवस्था को संबोधित करना या उन्नत पूँजीवादी देशों में गरीबों की समस्याओं पर ध्यान देना। ये मार्क्सवादी संदर्भ में स्थापित आलोचनात्मक यथार्थवादी कहानियों के उदाहरण हैं। 'वी ईट द माइन्स एंड द माइन्स ईट अस' में बोलिवियाई खदानों का एक ऐतिहासिक और वर्तमान विवरण है। दूसरा भावनाओं के समाजशास्त्र पर होश्चाइल्ड (1983) का काम एक आलोचनात्मक कहानी का एक और उदाहरण है, जिसमें मार्क्सवादी झुकाव नहीं है।

नारीवादी मानव जाति विज्ञान

महिला नृवंशविज्ञानियों ने नृवंशविज्ञान को एक नया दृष्टिकोण दिया है कि उन्हें कैसे लिखा और पढ़ा जाता है। जब नारीवादियों ने 1970 के दशक में पुंल्लिग सर्वनामों और संज्ञाओं के उपयोग पर सवाल उठाना शुरू किया, तो स्त्रीलिंग वस्तुतः नृवंशविज्ञान से अनुपस्थित थी। सैली स्लोकम ने अपने शोध पत्र 'वूमन द गैदरर : द मेल बायस इन एंथ्रोपोलॉजी' में 'मैन द हंटर' शब्द की लोकप्रिय छवि की आलोचना करते हुए 'पुरुषकेंद्रित अकादमी' पर हमला किया।

पैगीगोल्ड ने 'वूमेन इन द फील्ड' एक और किताब का विमोचन किया है। महिला मानवविज्ञानियों द्वारा संपादित इस खंड ने इस बारे में चर्चा की कि एक महिला होने के नाते विभिन्न संदर्भों में अनुसंधान करने वाले मानवविज्ञानी द्वारा किस प्रकार असहयोग किया गया। इस तरह के नारीवादी दृष्टिकोणों ने इस बात पर प्रकाश डाला है कि पश्चिमी बौद्धिक परंपरा में महिलाओं की कल्पना कैसे की जाती है, जो आमतौर पर पुरुष और श्वेत-केंद्रित दृष्टिकोण से बनती है, मुद्दों को हल नहीं करती है।

आज का मानव जाति विज्ञान

नृवंशविज्ञान के क्षेत्र में सबसे बड़ा बदलाव यह हुआ कि उसे लचीला बनाया गया। इस प्रक्रिया के तहत आत्म-परीक्षण, आत्म-आलोचना और आत्म-जागरूकता पर जोर, मानव विज्ञान में महत्वपूर्ण प्रगति में से एक रहा है। नृवंशविज्ञान में लचीलापन लाने के लिए प्रमुख रूप से तीन प्रयास किए गए-

1. नृवंशविज्ञान द्वारा यूरो-केंद्रित भेदभाव की पहचान की गई।
2. नारीवादी आंदोलन के उदय के परिणामस्वरूप नृवंशविज्ञान की पुरुष-केंद्रित प्रकृति पर सवाल उठाए गए।
3. 1967 में 'ए डायरी इन द स्ट्रिक्ट सैन्स ऑफ द टर्म' नामक मेलिनोवस्की की फील्ड डायरियों का विमोचन किया गया।

इन प्रयासों ने नृवंशविज्ञान की कार्यप्रणाली तकनीकों को बदल दिया, जिससे नृवंशविज्ञानियों द्वारा अपने क्षेत्र के काम के प्रति सजग हुए।

व्यक्तिगत/स्वयं-स्फूर्त मानव जाति विज्ञान या ऑटो एथनोग्राफी

ऑटो एथनोग्राफी की प्राथमिक विशेषता शोधकर्ता के विचार और क्षेत्र में उनके सामाजिक संपर्कों से प्राप्त अंतर्दृष्टि है। ऑटो एथनोग्राफी, नृवंशविज्ञान के दृष्टिकोण को स्वयं पर स्थानांतरित करने का अभ्यास है, जबकि नृवंशविज्ञान की बाहरी दृष्टि को उस

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

बड़े संदर्भ पर संरक्षित करता है, जिसमें आत्म-अनुभव विकसित होता है। इसमें व्यक्तिगत जीवन के अनुभवों और संस्कृति से उनके संबंधों के बारे में जांच करने और लिखने की प्रक्रिया और अंतिम परिणाम दोनों शामिल हैं। यह एक पद्धति के रूप में शोधकर्ता की व्यक्तिपरकता और अनुसंधान पर प्रभाव को समायोजित करता है।

ऑनलाइन मानव जाति विज्ञान

नृवंशविज्ञान का अभ्यास करने की एक नई तकनीक इंटरनेट समुदायों को विभिन्न रूपों में जांचने के लिए ऑनलाइन या आभासी मीडिया का उपयोग करना है। विभिन्न अध्ययन पद्धतियों के माध्यम से, यह शोध पद्धति इस बात की जाँच करती है कि मनुष्य कैसे रहते हैं और ऑनलाइन बातचीत करते हैं। हाइन के अनुसार, इंटरनेट के मामले में, इसका तात्पर्य यह है कि शिक्षाविद इस अवधारणा पर सवाल उठाते हैं कि इंटरनेट इसके तकनीकी पहलुओं का एक उत्पाद है और इसके बजाय यह जांचता है कि यह कैसे लोगों के रहने, उपयोग करने और सक्रिय रूप से इसे बनाने के तरीके से बनाया गया है।

ऑनलाइन वातावरण में नृवंशविज्ञान इंटरनेट-आधारित अंत:क्रियाओं की जटिलताओं को प्रकट करने और हमें ऑनलाइन से उभरने वाले नए सांस्कृतिक स्वरूपों की जाँच करने की अनुमति देने में सहायक रहा है। रोबिन्सन एवं शल्ज ने ऑनलाइन नृवंशविज्ञान के तीन प्रमुख चरणों को उजागर किये हैं-

1. अग्रणी तरीकों ने इंटरनेट को पहचान के विकास के लिए एक नए क्षेत्र के रूप में देखा है।
2. बहुआयामी तकनीकों का हालिया आगमन जो टेक्स्ट डेटा के साथ वीडियो और ऑडियो डेटा को एकीकृत करता है।
3. ऑफलाइन वातावरण के अंदर ऑनलाइन बातचीत की कल्पना करने का भी प्रयास करते हैं।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. मानव जाति विज्ञान की परिभाषा दीजिए।

उत्तर–आमतौर पर नृवंशविज्ञान को एक ऐसी कला अथवा वैज्ञानिक तरीके रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसके माध्यम से किसी संस्कृति या समूह का वर्णन किया जा सके। इस प्रकार नृवंशविज्ञान लोगों के समाज वैज्ञानिक विवरणों एवं उनके सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों की व्याख्या करता है।

नृवंशविज्ञान संसार को उसके सामाजिक संबंधों के दृष्टिकोण से जानने के लिए एक शोध पद्धति है। यह एक गुणात्मक शोध पद्धति है, जो देश और विदेशों में संस्कृति की विविधता पर आधारित है। नृवंशविज्ञान में व्यावहारिक शामिल है और यह प्रासंगिक है, जहां लोग प्रासंगिक हैं। नृवंशविज्ञान सामाजिक और सांस्कृतिक नृविज्ञान की प्राथमिक विधि है, लेकिन यह आमतौर पर सामाजिक विज्ञान और मानविकी का अभिन्न अंग है और प्राकृतिक विज्ञान सहित कई क्षेत्रों से इसकी विधियों को आकर्षित करता है। इन कारणों से, नृवंशविज्ञान अध्ययन के कई क्षेत्रों और कई प्रकार के व्यक्तिगत अनुभव से संबंधित हैं, जिसमें विदेश में अध्ययन और समुदाय-आधारित या अंतर्राष्ट्रीय इंटर्नशिप शामिल हैं।

नृवंशविज्ञान एक प्रकार का गुणात्मक शोध है, जिसमें किसी विशेष समुदाय या संगठन में उनके व्यवहार और बातचीत को करीब से देखने के लिए खुद को विसर्जित करना शामिल है।

ब्रेनर के अनुसार, नृवंशविज्ञान प्राकृतिक रूप से लोगों की उन दशाओं का अध्ययन करता है, जिनमें उनके सामान्य क्रियाकलाप, शोधकर्ताओं की उपलब्धियाँ एवं विचार सम्मिलित होते हैं। इसमें सिर्फ मानव के क्रियाकलापों को ही शामिल नहीं किया जाता, अपितु उनके समस्त तौर-तरीकों को बिना किसी बाह्य दबाव के सम्मिलित किया जाता है।

इस प्रकार नृवंशविज्ञान एक लचीली शोध पद्धति है, जो आपको समूह की साझा संस्कृति, सम्मेलनों और सामाजिक गतिशीलता की गहरी समझ हासिल करने की अनुमति देती है। हालाँकि, इसमें कुछ व्यावहारिक और नैतिक चुनौतियाँ भी शामिल हैं।

नृवंशविज्ञान अनुसंधान नृविज्ञान के क्षेत्र में उत्पन्न हुआ और इसमें अक्सर एक मानवविज्ञानी शामिल होता है, जो एक अलग आदिवासी समुदाय के साथ उनकी संस्कृति को समझने के लिए एक विस्तारित अवधि के लिए रहता है।

आज, नृवंशविज्ञान विभिन्न सामाजिक विज्ञान क्षेत्रों में एक सामान्य दृष्टिकोण है, न कि केवल नृविज्ञान। इसका उपयोग न केवल दूर या अपरिचित संस्कृतियों का अध्ययन करने के लिए किया जाता है, बल्कि शोधकर्ता के अपने समाज के भीतर विशिष्ट समुदायों का अध्ययन करने के लिए भी किया जाता है। उदाहरण के लिए, नृवंशविज्ञान अनुसंधान (कभी-कभी प्रतिभागी अवलोकन कहा जाता है) का उपयोग गिरोहों, फुटबॉल प्रशंसकों, कॉल सेंटर कार्यकर्ताओं और पुलिस अधिकारियों की जाँच के लिए किया गया है।

नृवंशविज्ञान का मुख्य लाभ यह है कि यह शोधकर्ता को समूह की संस्कृति और प्रथाओं तक सीधी पहुँच प्रदान करता है। यह किसी विशेष संदर्भ में लोगों के व्यवहार और अंत:क्रियाओं के बारे में प्रत्यक्ष रूप से सीखने का एक उपयोगी तरीका है। एक सामाजिक वातावरण में डूबे रहने से, आपके पास अधिक प्रामाणिक जानकारी तक पहुँच हो सकती है और स्वचालित रूप से उन गतिशीलता का निरीक्षण कर सकते हैं, जिनके बारे में आप केवल पूछकर नहीं जान सकते थे।

नृवंशविज्ञान भी एक खुली और लचीली विधि है। एक सामान्य सिद्धांत को सत्यापित करने या एक परिकल्पना का परीक्षण करने के लक्ष्य के बजाय, इसका उद्देश्य एक विशिष्ट संस्कृति के एक समृद्ध कथा खाते की पेशकश करना है, जिससे

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com